यह सही नहीं है!
न्याय के लिए
एम्मा तेनायुका का संघर्ष

यह सही नहीं है!

न्याय के लिए

एम्मा तेनायुका का संघर्ष

कारमेन तफोला और शैरिल टेनेयुका

चित्र : टेरी

1925....

चमकती, काली आँखों वाली छोटी लड़की उत्सुकता से स्कूल जा रही थी. रास्ते में वो एक छोटी सी झोंपड़ी के सामने से गुज़री जिसमें कोई दरवाजा नहीं था. अंदर, एक बच्चा रो रहा था. उसकी माँ अपनी पतली बाँहों और पतले शॉल से बच्चे को गर्म रखने की कोशिश कर रही थी. छोटी लड़की जानती थी कि उसे बहुत ठंड लग रही होगी और फिर उसकी काली आँखें चमक उठीं.

फिर वो एक चार साल लड़के के पास से गुज़री. लड़के के हाथों में कुछ छोटे पेकान (अखरोट जैसा मेवे) थे जिन्हें वो छील रहा था और दो छोटे भाइयों के साथ साझा कर रहा था. उन्होंने पेकान को उस उत्सुकता से खाया जैसे कि वो उनका आज का खाना हो. छोटी लड़की जानती थी कि वे भूखे थे, और उसकी आँखें फिर से चमक उठीं.

जब वह स्कूल पहुंची, तो उसकी टीचर ने खुशी से कहा, "एम्मा, देखो! आज हमारे पास पढ़ने के लिए एक नई किताब है."

एम्मा को पढ़ना पसंद था! उसने कक्षा में रखी हर किताब पढ़ी थी! लेकिन जब वो नई किताब पढ़ रही थी तब वो उन बच्चों को भी याद कर रही थी जिन्हें उसने उस सुबह देखा था.

स्कूल के बाद, वो नई किताब को घर ले गई और उसने फिर से पढ़ा. और जब वो सामने के बरामदे पर बैठी किताब पढ़ रही थी, तभी मारिया, उसकी हमउम्र पड़ोसी ने झाँका और पूछा, "तुम क्या कर रही हो?"

"मैं एक अद्भुत कहानी पढ़ रही हूँ! क्या तुम भी इसे पढ़ना चाहोगी?"

"ओह, मैं नहीं पढ़ सकती!" मारिया ने कहा. "मुझे पढ़ना नहीं आता है. पिछले साल, मैंने अक्षर सीखना शुरू किए थे. लेकिन फिर, मौसम गर्म होने लगा और फूल खिलने लगे. और फिर मेरे परिवार को प्याज तोड़ने के लिए बहुत दूर जाना पड़ा."

"हमने प्याज और फिर स्ट्रॉबेरी तोड़ीं. हमने गोभी, और फिर कपास तोड़ी. हमने चुकंदर और फिर मकई तोड़ी. फिर जब तक हम वापस आए, तब तक स्कूल बंद हो चुका था, फिर गर्मी की छुट्टियां ख़त्म हुईं और स्कूल फिर से शुरू हो गया."

"फिर जब मैं वापस स्कूल गई, तो मैं एकदम खो गई. वहां हर बच्चा पहले से ही पढ़ना जानता था. और मुझे पढ़ना बिल्कुल नहीं आता था. क्योंकि तब मैं स्कूल नहीं जा पाई थी!"

एम्मा की काली आँखें काले आकाश में बिजली की तरह चमक उठीं. "यह सही नहीं है!!"

मारिया ने आह भरते हुए कहा, "अब मैं बहुत पीछे हूं, मैं कभी भी पढ़ना नहीं सीखूंगी."

एम्मा एकदम शांत हो गई, पर उस छोटी लड़की के शब्द उसके अंदर बहुत देर तक घूमते रहे.

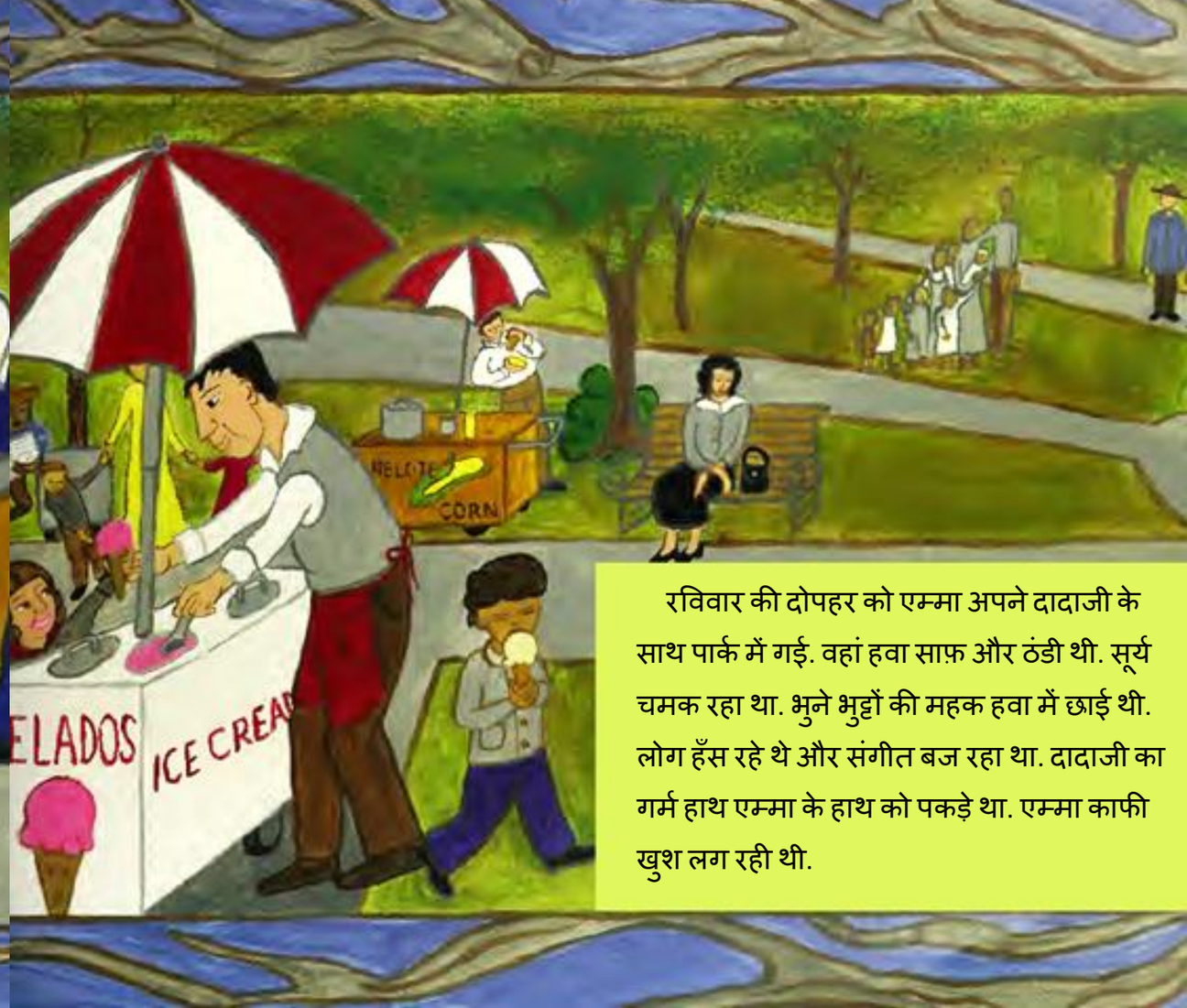

रविवार की दोपहर को एम्मा अपने दादाजी के साथ पार्क में गई. वहां हवा साफ़ और ठंडी थी. सूर्य चमक रहा था. भुने भुट्टों की महक हवा में छाई थी. लोग हँस रहे थे और संगीत बज रहा था. दादाजी का गर्म हाथ एम्मा के हाथ को पकड़े था. एम्मा काफी खुश लग रही थी.

लेकिन पार्क के एक कोने में लोग बड़े ध्यान से एक आदमी की बातें चुपचाप सुन रहे थे. आदमी की बगल में उसकी पत्नी थी जिसकी गोद में एक बच्चा था. और उसकी बगल में छह और बच्चे थे, जो सीढ़ियों की तरह खड़े थे.

एम्मा ने उनके फटे पुराने कपड़ों और उनकी सुंदर भूरी त्वचा को देखा, जो सूरज के तपने से और गहरे रंग की हो गई थी.

"मैं अपने परिवार को कैसे खिलाऊंगा?" उन बच्चों के पिता ने पूछा. "हमने सारी गर्मियों भर काम किया, फसल उगाई. लेकिन जब वेतन मिलने का समय आया, तो किसान ने हमें बंदूक दिखाकर भगा दिया! अब हमारे पास न तो भोजन है और न ही रहने के लिए जगह!"

दादाजी ने एम्मा की आँखों में बिजली की चमक देखी और फुसफुसाए, "दादाजी लेकिन यह बात सही नहीं है!"

उस रात, दादाजी ने एम्मा के लिए एक कप में गर्मागर्म चॉकलेट उँडेली. फिर दादाजी ने उसे गोद में उठाया.

एम्मा ने उन्हें ठंडे से कांपते बच्चे के बारे में बताया, भूखे छोटे लड़कों के बारे में, और मारिया के बारे में भी जो पढ़ नहीं सकती थी. एम्मा के शब्द ऐसे बाहर निकल रहे थे जैसे वे उसके अंदर बहुत समय से सीलबंद हों.

"यह सही नहीं है!" वो चिल्लाई. एम्मा की बातें दादाजी के दिल की गहराइयों को छू गईं.

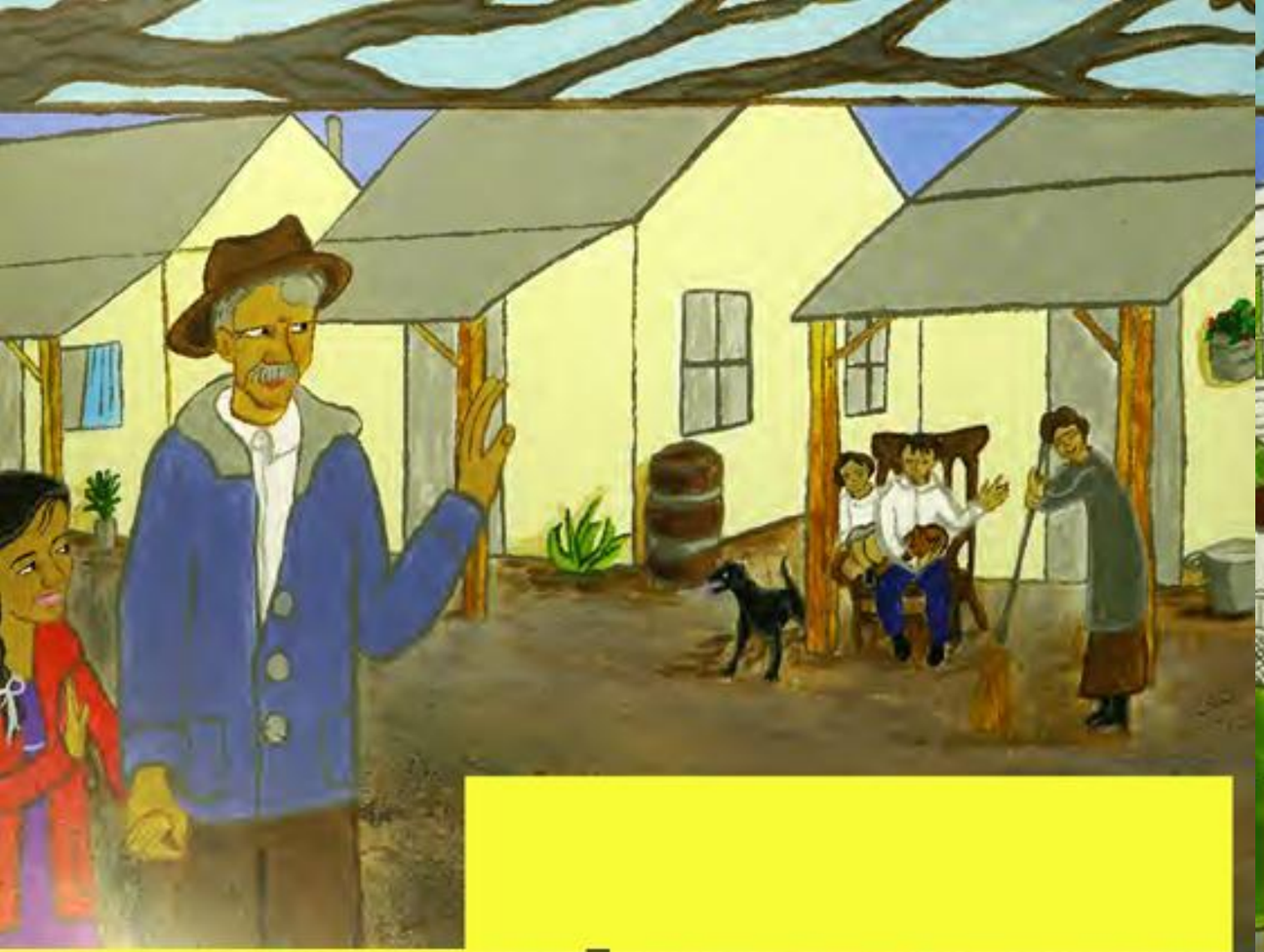

अगले दिन, एम्मा और दादाजी टहलने गए. उन्होंने बड़े आलीशान और सुंदर घर और साथ में छोटी-छोटी झोंपड़ियों को भी पार किया. दोनों तरफ से लोग उन्हें देखकर मुस्कुराए और उन्होंने उनका अभिवादन किया.

जब वे आगे बढ़े तब उन्होंने लोगों को कड़ी मेहनत करते देखा. कुछ अंधेरे, सुनसान फैक्ट्रियों में पेकान (अखरोट जैसी मेवा) का छिलका उतारने जा रहे थे. कुछ लोग सुंदर इमारतों में प्रवेश कर रहे थे.

फिर उन्होंने एक बहुत बूढ़ा आदमी देखा जो बहुत मुश्किल से चल पा रहा था. लेकिन उसके हाथों में एक गिटार था और वो गा रहा था. गीत के शब्द इतने सुंदर थे कि उसकी समृद्ध आवाज को किसी वाद्ययंत्र की ज़रुरत नहीं थी.

एम्मा मुस्कुराई और उसने खुद गाने के शब्द दोहराए:

"सूर्य," गीत के शब्द थे, "तुम, बहुत दयालु और निष्पक्ष हो, क्योंकि तुम अपने प्रकाश को सभी के साथ समान रूप से साझा करते हो. तुम मेरे मालिक को आपके जैसा निष्पक्ष होना सिखाओ."

टहलकर आने के बाद भी एम्मा अभी भी गाना गुनगुना रही थी. फिर से, दादाजी ने एम्मा के पसंदीदा कप में हॉट चॉकलेट डाली.

जैसे ही उसने ज़ायकेदार दालचीनी वाली चॉकलेट पी, दादाजी ने कहा, "कभी-कभी चीजें ठीक नहीं होती हैं. लेकिन फिर भी, हम में से हर कोई व्यक्ति उन्हें ठीक करने के लिए कुछ-न-कुछ ज़रूर कर सकता है, भले ही वो एक छोटा काम क्यों न हो."

एम्मा ने पूछा, "जैसे हमने पार्क में उस आदमी को अपनी आइसक्रीम के पैसे दे दिए थे? हो सकता है कि उसने उससे अपने बच्चे के लिए दूध खरीदा हो? या उस दिन जब आप मुझे अपने साथ लेकर वोट देने गए थे जिससे बेहतर कानून बन सकें?"

दादाजी ने सिर हिलाया.

"और बूढ़ा आदमी. उसने भी मदद की," एम्मा ने कहा, "उसने लोगों को समझाने के लिए सही शब्दों वाला एक प्रेरक गीत गाया था."

अगले दिन, स्कूल से लौटते समय, एम्मा ने उन्हीं तीन छोटे भाइयों को देखा.

"यह लो," उसने कहा, और उसने उन्हें अपने दोपहर के भोजन के थैले में से एक सेब दे दिया. वो अच्छी तरह जानती थी कि उसके पास सिर्फ एक ही सेब था. इससे पहले कि वो कुछ कदम आगे जाती वे बच्चे सेब को खत्म कर देते.

फिर, एम्मा ने उस युवा माँ को पतले शॉल के साथ देखा.

"यह लो," उसने उस महिला को अपना नया नीला स्वेटर देते हुए कहा. "यह छोटे बच्चे के लिए है."

परंतु! वो जानती थी कि वो सिर्फ एक स्वेटर था, जो केवल एक या दो सर्दियों तक ही चल सकता था.

लेकिन, जब वो घर आई, तो उसने मारिया को अक्षर, शब्द और पढ़ना सिखाना शुरू किया.

एम्मा यह जानती थी, कि वो पढ़ाई मारिया के साथ हमेशा रहेगी.

फिर कई साल बीते, और एम्मा एक स्मार्ट, दयालु किशोरी के रूप में बड़ी हुई. उसके चारों ओर भूख, दुख और गरीबी थी. और मजदूरों में सबसे गरीब पेकान छीलने वाले मज़दूर थे. कई लोग उन्हें एक घंटे के काम के लिए केवल चार सेंट ही देते थे. उनमें से ज्यादातर मैक्सिकन-अमेरिकी थे. ज्यादातर महिलाएं थीं. उनमें कुछ बच्चे भी थे.

एम्मा ने दूसरे लोगों से उन चीजों के बारे में बात करना शुरू की जो उसे उचित नहीं लगती थीं. उसने सार्वजनिक पार्कों और बाजार में बात की जहां किसान अपनी सब्जियां बेचते थे. उसने सिटी हॉल की सीढ़ियों पर भी लोगों से बात की!

जब वो लोगों से बात करती थी तो उसकी काली आँखें चमक उठती थीं और उसकी आवाज़ साहस और दया से भरी होती थी. लोगों ने उसकी बातें सुनीं, और उसके शब्दों ने उनके दिलों को छुआ जैसे एक अंधेरी रात के आकाश में चमकती बिजली, आशा जगाती है.

1938...

लेकिन उनके कई बड़े आकाओं ने उसकी बात नहीं सुनी. वे मजदूरों को कम-से-कम वेतन देना चाहते थे. जब एम्मा 21 वर्ष की हुई, तब मालिकों ने पेकान मज़दूरों के वेतन को और भी घटाने का फैसला किया. अब वे एक घंटे के काम के लिए मुश्किल से तीन सेंट कमा पाते थे! मजदूरों को डर था कि उनके बच्चे भूखे मर जाएंगे.

एम्मा बहुत गुस्से में थी.

उसने देखा कि बहुत से लोग सुबह-सुबह काम पर जाते थे जब बाहर अंधेरा होता था और देर रात को ही घर लौटते थे. बहुत लोग इतने घंटे काम करते थे कि वे खाँसते थे और बीमार पड़ जाते थे. इतनी मेहनत के बाद भी वे अपने बच्चों को खिलाने के लिए पर्याप्त नहीं कमा पाते थे.

जबकि उनके मालिक दिन में सिर्फ एक या दो घंटे ही काम करते थे. उनके पास इतना पैसा था कि वे केवल एक बार इस्तेमाल करने के बाद महंगे कपड़ों को फेंक देते थे, या अच्छे भोजन को फेंक देते थे जिन्हें मज़दूर अपने बच्चों को दे सकते थे.

एम्मा ने मालिकों से भी बात की. उसने उनसे मजदूरों के बारे में सोचने की भीख माँगी. वो सुनकर एक मालिक हँसा. "उनकी गरीबी से फर्क पड़ता है?" उसने कहा. "वे लोग मैक्सिकन हैं!"

एम्मा जानती थी कि यह उचित नहीं था. जब पेकान छीलने वाले मज़दूरों ने उससे मदद मांगी, तो वह जानती थी कि उसे क्या करना था.

एम्मा ने कहा, "जब तक मालिक आपकी बात नहीं सुनते, तब तक आप सभी को काम करना बंद कर देना चाहिए."

"हम आपके परिवारों को खिलाने के लिए सूप-किचन बनाएंगे. अगर हम सब एक-दूसरे की मिलकर मदद करेंगे, तो हम ज़रूर जीतेंगे."

"कोई भी तुम्हारी बात नहीं सुनेगा!" कुछ लोगों ने उस पर हंसते हुए कहा. लेकिन 12,000 पेकान छीलने वाले मज़दूरों ने उसकी सुनी. कारखाने खाली हो गए. लगभग दो महीने तक, कारखानों के मालिकों ने कोई पैसा नहीं कमाया. उसके बाद कई मालिक एम्मा से नफरत करने लगे. उसे बार-बार धमकाया गया और जेल भेजा गया. लेकिन एम्मा ने न्याय के लिए लड़ना बंद नहीं किया. अंत में, मालिकों को श्रमिकों का वेतन बढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ा.

यह केवल एक जीत थी. पेकन छीलने वाले मज़दूरों की कहानी पूरे देश के अखबारों में छपीं. जो शक्तिहीन थे, वे अन्याय के खिलाफ जीते थे - हर जगह लोगों ने इस बात का जश्न मनाया.

एम्मा ने जो कुछ गरीब लोगों के लिए किया उसके लिए वो उसे प्यार करते थे. एम्मा ने उन्हें आवाज और आशा दी थी.

सभी के लिए आने वाला कल उज्जवल होगा.

और अंत में वही उचित था.

एम्मा ने 15 साल की उम्र में, अपने पहले विरोध मार्च में भाग लिया

एम्मा तेनायुका

एम्मा तेनायुका का जन्म 21 दिसंबर, 1916 को सैन एंटोनियो, टेक्सास में हुआ था. ग्यारह बच्चों में से एम्मा दूसरी थी. कम उम्र में वो अपने दादा-दादी के पास रहने चली गई. उनके दादा अक्सर उसे प्लाजा डेल ज़ाकाते (मिलम पार्क) ले जाते थे, जहाँ बीसवीं सदी की शुरुआत में कई राजनीतिक हस्तियों और मैक्सिकन क्रांतिकार्यों ने गरीब श्रमिकों की दुर्दशा के बारे में भाषण दिए थे. 16 साल की उम्र में, एम्मा लेबर मूवमेंट में शामिल हो गई, जब वो एक मोर्चे में शामिल हुई - और सिगार कंपनी के खिलाफ हड़ताल के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. 20 साल की उम्र में एम्मा, वर्कर्स एलायंस अमेरिका की दस इकाइयों की महासचिव बनीं.

एम्मा मैक्सिकन-अमेरिकी श्रमिकों द्वारा झेली जाने वाली अत्यधिक गरीबी और अन्याय के बारे में चिंतित थी. दक्षिण टेक्सास में पेकान शेलर्स की संख्या में भारी कटौती की गई थी. तपेदिक का संकट लगभग दोगुना हो गया था, जो ज्यादातर भीड़-भाड़ वाले, बंद कमरों में पेकान की धूल में सांस लेने के कारण होता था. अपने शक्तिशाली भाषणों और बातचीत के कौशल के कारण कार्यकर्ताओं ने एम्मा को उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा. इस प्रकार, 21 साल की उम्र में, उसने अच्छी मजदूरी और बेहतर परिस्थितियों की मांग में शहर के 12,000 पेकान शेलर का नेतृत्व किया. कई मौकों पर, 8,000 से अधिक श्रमिक अपनी भुखमरी के स्तर की गरीबी के बावजूद सक्रिय रूप से हड़ताल पर गए. एम्मा को कई बार जेल में डाला गया था और गरीबों की रक्षा के कारण उन्हें काम से वंचित किया गया. हमेशा विवादों में रहने के कारण वो सैन एंटोनियो छोड़ना चाहती थी और वहां जाना चाहती थीं जहां वो कम प्रसिद्ध हों जिससे उसे वहां कोई नौकरी मिल सके. फिर एम्मा ने कई साल काम किया, पैसे बचाए और खुद फ्रांसिस्को, सीए के एक कॉलेज में पढ़ीं. बीस साल बाद, वो सैन एंटोनियो लौट आईं और उन्होंने मास्टर्स की डिग्री हासिल की, और प्रवासी श्रमिकों को पढ़ाने वाली शिक्षिका बन गईं. 1999 में एम्मा की मृत्यु हो गई, वो अपने पीछे एक बड़े विस्तारित परिवार को छोड़ गई. ऐसे बहुत से लोग थे जिन्होंने उनसे सीखा था और जो उनसे प्यार करते थे. एम्मा अपने पीछे न्याय के लिए सामाजिक परिवर्तन की प्रतिबद्धता की एक विरासत भी छोड़ गई.

यह पुस्तक एम्मा की भतीजी, शैरिल टेनेयुका और एम्मा की मित्र डॉ. कारमेन तफ़ोइला ने उनकी स्मृति में लिखी है. कहानी में बूढ़े आदमी का गीत प्रवासी खेतिहर मजदूरों का एक पारंपरिक गीत है.

1920 के दशक में, सैन एंटोनियो, टेक्सास में, **एम्मा टेनायुका** नाम की एक युवा लड़की ने अपने चारों ओर एक नज़र डाली और फैसला किया कि कुछ लोगों का जीवन बहुत गरीबी में बीत रहा था. वो परिस्थितियों को बदलने के लिए काम करने लगीं. उन्होंने अन्य बच्चों को पढ़ना सिखाया, और गरीब लोगों के साथ साझा करने का मूल्य सीखा. कुछ ही वर्षों बाद, अपनी किशोरावस्था में ही एम्मा ने 2,000 गरीब श्रमिकों - पेकान शेलर - का नेतृत्व किया - और मज़दूरों ने उचित वेतन और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए ऐतिहासिक हड़ताल की. इतिहासकार इस हड़ताल को नागरिक अधिकारों और न्याय के लिए मैक्सिकन-अमेरिकी संघर्ष की शुरुआत मानते हैं. एम्मा मैक्सिकन-अमेरिकी इतिहास में एक सम्मानित व्यक्ति हैं.